IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

आचार्य श्रीराम शर्मा के चिंतन में भक्तियोग का स्वरूप

डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्र
एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग,
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म.प्र

शोध सार - पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार जिस प्रकार शरीर पोषण के लिए आहार, जल और वायु तीनों साधनों की अनिवार्य आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार आत्मिक प्रगति की आवश्यकता पूरी करने के लिए भी तीन माध्यम अपनाने पड़ते हैं ये हैं- उपासना, साधना और आराधना।भारतीय दर्शन में ईश्वर की प्राप्ति, आत्मस्वरूप की प्राप्ति के लिए तीन मार्ग- भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग, और कर्म मार्ग बताये हैं। आचार्य जी इन तीनों को समन्वित रूप में अपनाने की बात कहते हैं। उपासना भक्तियोग है, साधना ज्ञानयोग और आराधना कर्मयोग । मन के तीन अंग है- भावना, ज्ञान और क्रिया । उपासना से भावना का जीवन साधना से व्यक्तित्व का एवं आराधना से क्रियाशीलता का परिष्कार और विकास होता है।

बीज शब्द-उपासना, साधना, आराधना,गायत्री ,षड्चक्र |

पं. श्री राम शर्मा आचार्य जी के चिंतन में परमात्मा सारी श्रेष्ठताओं एवं उत्कृष्टताओं का विधान है, वह समस्त सत्प्रवृत्तियों एवं अनन्त शक्तियों का केन्द्र है। जो परमात्मा का सच्चे मन से जितना-जितना चिंतन करता है, वह उसी अनुपात से परमात्मा के रूप में बदलता जाता है। उपासना एक व्यायाम प्रक्रिया है जिसके अनुसार आत्मबल बढ़ाया जाता है। इस आत्मपरिष्कार के फलस्वरूप उन विभूतियों की चाभी हाथ लग जाती है जो परमेश्वर ने पहले से ही हमारे भीतर रत्नभण्डार के रूप मे सुरक्षित कर दी है।

भारतीय दर्शन में ईश्वर की प्राप्ति, आत्मस्वरूप की प्राप्ति के लिए तीन मार्ग- भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग, और कर्म मार्ग बताये हैं। पं.श्रीराम शर्मा आचार्य इन तीनों को उपासना-साधना एवं आराधना की त्रिवेणी के समन्वित रूप में अपनाने की बात कहते हैं।आचार्यश्रीके अनुसार जिस प्रकार शरीर पोषण के लिए आहार, जल और वायु तीनों साधनों की अनिवार्य आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार आत्मिक प्रगति की आवश्यकता पूरी करने के लिए भी तीन माध्यम अपनाने पड़ते हैं, ये हैं- उपासना, साधना और आराधना।[i] उपासना भक्तियोग है, साधना ज्ञानयोग और आराधना कर्मयोग । मन के तीन अंग है- भावना, ज्ञान और क्रिया । उपासना से भावना का जीवन साधना से व्यक्तित्व का एवं आराधना से क्रियाशीलता का परिष्कार और विकास होता है।

"उप" उपसर्ग पूर्वक "आस" उपवेशने धातु से "युञ्" प्रत्यय करने पर "टापू प्रत्ययंत "उपासना" शब्द बनता है। उपासना का अर्थ है- उप+आसन अर्थात् ईश्वर के समीप - बैठना। ईश्वर के पास बैठने योग्य स्वयं को सुपात्र-पवित्रतम बनाकर उसके आदर्शों को जीवन में उतारने का प्रयास करना। आचार्य जी के अनुसार "ईश्वर एक प्रकार का विज्ञान है और उपासना उसे प्राप्त करने की वैज्ञानिक पद्धति। ईश्वर उपासना का अर्थ है, ईश्वर के समीप बैठना। जल, अग्नि और वायु

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

की समीपता से जिस तरह मनुष्य तुरन्त उसके गुणों का प्रभाव अनुभव करने लगता है ठीक उसी प्रकार से परमात्मा का सानिध्य प्राप्त होते ही जीवन का आपा विस्तीर्ण होने लगता है, उसकी शक्तियों प्रकीर्ण होने लगती है उस प्रकाश में 'मनुष्य न केवल अपना मार्ग दर्शन करता है अपितु औरों को भी सन्मार्ग की प्रेरणा देता है।[ii]

ईश्वर की उपासना जीवन की एक ऐसी अनिवार्य आवश्यकता है जिसके अभाव में आत्म सत्ता पर कषाय-कल्मषों का आवरण छाता चला जाता है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने उपासना को आत्मा की एक अनिवार्य खुराक बताया है उन्हीं के शब्दों में- "दैनन्दिन जीवन की अन्यान्य आवश्यकताओं की तरह उपासना भी एक ऐसा पुरुषार्थ है जो नित्य की जानी चाहिए। रोजमर्रा के जीवन में हमारे आत्म सत्ता पर सूक्ष्म जगत से आ रही प्रदूषणों की कालिमा का आवरण छाता रहता है, इस कालिमा की नित्य सफाई ही उपासनात्मक पुरुषार्थ है।[iii]श्रीरामकृष्ण परमहंस कहा करते थे "अपने लोटे को रोज मांजो अर्थात् अपनी आत्मा की सफाई नित्य नियमित रूप से करते रहें उसमें कभी आलस्य या प्रमाद न वरते।" [iv]

आचार्यजी ने अनेकानेक उदाहरण देकर उपासना की महत्ता बतलाई है। गरम वस्तु के पास रखे पदार्थ गरम हो जाने, पारस के सम्पर्क में आकर अनगढ़ लोहे का स्वर्ण बन जाने वृक्ष का सम्पर्क पाकर पावों से कुचल जाने वाली वेल के ऊपर आकाश घूमने तथा गंदे नाले का गंगा में मिलकर गंगा नदी ही कहलाने की उपमाएँ देकर उन्होंने यह बतलाया है कि ऐसा ही चमत्कार उपासना से मिल सकता है यदि व्यक्ति उसका तत्व दर्शन और विज्ञान समझकर करे।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार परमात्मा सारी श्रेष्टताओं एवं उत्कृष्टताओं का विधान है। वह समस्त सत्प्रवृतियों एवं अनन्त शक्तियों का केन्द्र है, इसलिए वे गुण उस उपासक में भी आने और बसने लगते हैं। जो परमात्मा का सच्चे मन से जितना जितना चिंतन करता है, उसी अनुपात में परमात्मा के रूप में बदलता जाता है। प्रकाश के संग में आने वाली सभी वस्तु भी प्रकाशित हो उठती है जिन उपासको में परमात्मा के लक्षण संकलित होते दिखाई न दें, समझ लेना चाहिए कि उसकी उपासना और परमात्मा के बीच कामनाओं वांछनाओं तथा वासनाओं का व्यवधान पड़ा हुआ है और जब तक व्यवधान हटाया नहीं जाएंगा उपासना का वास्तविक फल प्राप्त होना सम्भव नहीं हैं।[v]श्रीरामकृष्ण परमहंस के शब्दों में "जब तक पशुभाव, विषय वाचनाऐं न मिटे तब तक ईश्वर के आनन्द का आस्वादन नहीं हो सकता।" [vi]

इसलिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए की पशुभाव मिटे आत्मा और परमात्मा के बीच का व्यवधान दूर हो।

आचार्य जी के अनुसार उपासना का उद्देश्य किसी के सामने गिडगिडाना, झोली पसारना या याचना करना नहीं हैं। यह विशुद्ध रूप से आत्म परिष्कार जीवन शोधन और पवित्रता के विकास की सुनियोजित प्रक्रिया है। ईश्वर ऐसा दानी नहीं है कि हर माँगने वालो की. फिर चाहे वह अज्ञानजन्य और अवांछनीय ही क्यों न हो पूरी करता चले। डाक खाने में जाकर जलेवी और दर्जी की दुकान पर दवा मांगे तो निराशा ही हाथ लगेगी। आचार्य जी के अनुसार ईश्वर सर्वसमर्थ दाता है, यह तो ठीक है पर वह दाता ही नहीं विज्ञाता और पिता भी है। हमारी आवश्यकताएँ वह हमसे अधिक जानता है, अतः देते समय वह विवेक से काम नहीं लेगा यह कल्पना करना हास्यास्पद तो है ही. खुद ईश्वर को मूढ या चापलूस पसंद मानना है। आचार्य जी के शब्दों में ईश्वरीय अनुग्रह सत्प्रवृत्तियों, सद्भावनाओं के रूप में ही हम पर बरस सकता है। ईर्ष्या, द्वेष, लोलुपता, व्यसन, अहकार रोग विकार को बढ़ाने वाली प्रवृतियाँ और सुविधाएँ ईश्वर क्यों कर देगा? [vii]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

कर्मफल की व्यवस्था सृष्टि का कठोर और अपरिवर्तनीय नियम है। एक सच्चा न्यायाधीश अपने बेटे को भी अपराध का दण्ड देकर न्याय की रक्षा करता है। इसलिए सचित कर्मों के छुटकारे का एक ही सनातन मार्ग और विधान है- प्रायश्चित। पिछली भूलों पर खेद प्रकट कर देना या क्षमा मांग लेने की औपचारिकता पूरी कर लेने से काम नहीं चलता।। आचार्य शर्मा जी के शब्दों में "समाज को जो क्षति पहुँचायी है उतना अनुदान देकर उस गड्ढे को पाटना पड़ेगा। मन को कुकर्म के द्वारा जितना कलुषित किया गया है उतना ही सत्कर्म के उल्लास से उसका संतुलन बनाना पड़ेगा। अनाचार की जिन अवांछनीय लहरों से वातावरण को क्षुब्ध किया था उसका समाधान पुण्य और परमार्थ की प्रक्रिया अपनाकर करना होगा।" [viii]

इतना साहस भक्त में उदय होता है और वह अपनी सदाशयता सिद्ध करने के लिए न्याय के कटघरे में खड़े होने से पूर्व स्वयं ही उपस्थित होकर अपनी भूल स्वीकारने और उसकी क्षतिपूर्ति करने की बहादुरी दिखाता है। ईश्वर भक्त केवल ईश्वर के शासन में रहता है और उसी के निर्देश पर चलता है। मन की गुलामी उसे छोड़ने पड़ती है, जो मन का गुलाम है वह ईश्वर भक्त नहीं हो सकता और जो ईश्वर भक्त है उसे मन की गुलामी न स्वीकार हो सकती है, न सहन | [ix]

पं. श्री राम शर्मा आचार्य जी के अनुसार उपासना का वरदान महानता है। साधना जितनी ही सच्ची और प्रखर होती है, उतने ही हम महान बनते चले जाते है। तब हमें किसी से कुछ मांगना नही पड़ता। ईश्वर से भी नही, तब अपने पास देने को बहुत होता है इतना अधिक कि उससे अपने को, दूसरों को और अपने परमेश्वर को संतुष्ट किया जा सके।

उपासना का प्रयोजन अपने अज्ञान और अविवेक का निराकरण करना, अपनी कामनाओं का परिशोधन करना अपने कर्तृत्व में देवत्य का समावेश करना और कुत्साओंकुंठाओं को जड़ मूल से उखाड़ फेंकना है। उपासना एक व्यायाम प्रक्रिया है, जिसके अनुसार आत्मबल बढ़ाया जाता है। देव पक्ष की सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन किया जाता है। इस आत्म परिष्कार के फलस्वरूप उन विभूतियों की चाबी हाथ लग जाती है जो परमेश्वर ने पहले से ही हमारे भीतर रत्न भण्डार के रूप में सुरक्षित कर दी हैं।

उपासना का प्रधान आधार श्रद्धा और विश्वास है। श्रद्धा एक जीवन्त शक्ति है जिसका आरोपण जहाँ भी किया जाय वहीं अभिनव चेतना उभर पडती है। आग को जिस वस्तु में भी लगा दिया जाए वही गर्म और चमकीली हो जाती है। आचार्य शर्मा जी के शब्दों में झाड़ी में स्थित भूत का कोई अस्तित्व नहीं होता, किन्तु उसकी मान्यता और विश्वास के आधार पर अंधकार में साकार भूत आ धमकता है और उस व्यक्ति को कितना भयभीत कर देता है यह हर कोई जानता है। कल्पना का यह भूत यदि किसी को विक्षिप्त, पागल और मार सकता है. तो दिव्य गुणों से, दिव्य क्षमताओं से ओत-प्रोत आराध्य हमारे जीवन को दिव्य न बनाये, ऐसा कैसे हो सकता है। [x]इसलिए उपासना की मान्यता के लिए हमें अपनी मनोभूमिश्रद्धासिक्त करना होगा।

उपासना के दो चरण हैं - जप और ध्यान। ईश्वर को स्मृति पटल पर प्रतिष्ठापित करने के लिए उसके नाम जप का सहारा लेना पड़ता है। स्मरण से आह्वान आह्वान से स्थापना और स्थापना से उपलब्धि का क्रम चल पड़ना मनोविज्ञान शास्त्र द्वारा समर्थित है। मन को अमुक चितन प्रवाह से हटाकर अमुक दिशा में नियोजित करने की प्रक्रिया ही ध्यान कहलाती है। ध्यान में केवल रूप देखना ही पर्याप्त नहीं है उसमें गहरी तन्मयता पैदा करनी होती है। आचार्य जी के शब्दों में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

"उपासना में भगवान का स्वरूप, गुण, कर्म, स्वभाव कैसा हो. इसकी ध्यान प्रतिमा विनिर्मित की जाती है और फिर उसके साथ समीपता, एकता, तादात्म्यता स्थापित करते हुए उसी स्तर का बनने के लिए प्रयत्न किया जाता है। [xi]

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने उपासना हेतु गायत्री मंत्र को विशेष महत्व दिया है। उनके ही शब्दों में- "याँ उपासना के लिए किसी भी पद्धति को अपनाया जा सकता है। श्रद्धा और भावना के अनुरूप सभी उपासनाएँ सामान्य रूप से फलदायी सिद्ध होती हैं पर अपनी दृष्टि में, निज के अनुभवों के आधार पर वेद माता गायत्री का आँचल पकड़ना हर दृष्टि से लाभप्रद है |[xii]

व्युत्पति शास्त्र की दृष्टि से गायत्री वह है जो उसके गाने वाले (जपकर्त्ता) की रक्षा करती है गायतत्रायते इति गायत्री" [xiii]गायत्री को वेदों की माता बतलाया गया है। गायत्री वेद जननी है। मंत्र शास्त्र में कहा गया है कि गायत्री से श्रेयष्कर कोई मंत्र है ही नहीं- गायत्रया न परो मंत्र विश्वामित्र ऋषि का मत है कि चारों वेद में गायत्री समान कोई मंत्र नहीं है। इतना ही नहीं संपूर्ण वेद गायत्री मंत्र के एक कला के समान भी नहीं हैं। याज्ञवल्क्य, पाराशर, शंकशौनक आदि ऋषियों एवं वर्तमान समय के महापुरूषों जैसे महामना: मदन मोहन मालवीय, तिलक, महात्मा गाँधी, रविन्द्र नाथ टैगोर, श्री अरविन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ, श्री रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानन्द आदि ने भी गायत्री को मनुष्य के उद्धार एवं मोक्ष प्राप्ति के निमित्त सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया है। [xiv]

वास्तव में सरस्वती, लक्ष्मी, काली, माया, प्रकृति, राधा, सीता, सावित्री, पार्वती आदि के रूप में गायत्री शक्ति की ही पूजा की जाती है क्योंकि यह खुला रहस्य है कि शक्ति बिना मुक्ति नहीं। अथर्ववेद में गायत्री को आयु, प्राण, शक्ति, समृद्धि, कीर्ति, धन और ब्रह्म तेज प्रदान करने वाली कहा गया है "ॐ स्तुतामयावरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम्पावमानीद्विजानाम् आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, द्रविणम् ब्रह्म वर्षसम्महयदत्वाव्रजत ब्रह्म लोकम् । [xv]

गायत्री मंत्र- "ॐ भूर्भुवःस्वःतत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात्।"

भावार्थ- ॐ (ब्रहम परमात्मा) भू (प्राण स्वरूप) भुवः (दुःख नाशक) स्पः (सुख स्वरूप) त (उस) सवितु (तेजस्वी, प्रकाशवान वरेण्यं (श्रेष्ठ), भर्गो (पापनाशक), देवस्य दिव्य देव स्वरूप), धीमहि (धारण करें) लियो (बुद्धि), यो (जो) न. (हमारी) प्रचोदयात्प्रेरित करें। अर्थात् उस प्राण स्वरूप, दुःख नाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक देव स्वरूप परमात्मा को हम अंतरात्मा में धारण करें। यह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें |[xvi]

आचार्य जी के अनुसार गायत्री उपासना कोई अंध विश्वास नहीं वरन् ठोस वैज्ञानिक कृत्य है और उसके द्वारा लाभ भी सुनिश्चित ही होता है। शरीर में अनेक छोटी-बड़ी दृश्य-अदृश्य ग्रंथियाँ होती है जिसमें विशेष शक्ति भंडार छिपा रहता है। सुषुम्ना से संबद्ध षड़चक्र प्रसिद्ध हैं ऐसे ही अनेक ग्रंथियाँ शरीर में हैं। विविध मंत्र शब्दों का उच्चारण इन विविध ग्रंथियों पर अपना प्रभाव डालते हैं। जिनसे उन ग्रथियों की शक्ति भंडार जागृत होते. हैं। गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों का सम्बंध शरीर में स्थित ऐसे 24 ग्रंथियों से है जिनके जागरण के साथ अनेक प्रकार की सफलताएँ, सिद्धियाँ और सम्पन्नता प्राप्त होना आरम्भ हो जाता है। यह लाभ अनायास नहीं हो रहा होता वरन आत्म विद्या की सुव्यवस्थित वैज्ञानिक प्रक्रिया का ही यह परिणाम है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुसार गायत्री मंत्र के 24 अक्षर जीवन के गतिविधियों का निर्णय करने में कसौटी का काम देते हैं। प्रत्येक अक्षर एक-एक स्वर्ण शिक्षा का प्रतीक है। क की शिक्षा है कि सर्वत्र परमात्मा को व्यापक समझ कर कहीं भी गुप्त या प्रकट रूप से बुराई न करो। नू की शिक्षा है अपने अंदर संपूर्ण उत्थान-पतन को ढूंढो का अर्थ कर्तव्य कर्म में तत्परता से प्रवृत्त रहो और फल के लालच में अधिकन उलको का अर्थ है कि स्थिर रहो हर्ष शोक में उद्विग्न न बनो। छत् से तात्पर्य है कि इस शरीर के क्षणिक सुखों को ही सब कुछ न समझो। सवितु' का भावार्थ है- अपने को विद्या बुद्धि स्वास्थ्य धन, यश, मैत्री, साहस आदि शक्तियों से अधिकाधिक सुसंपन्न करना। वरेण्य का संदेश है कि इस दूरंगी दुनिया में से केवल श्रेष्ठ का ही स्पर्श करो। भर्गो का उपदेश है शरीर मन मकान, वस्त्र तथा व्यवहार को स्वच्छ रखना। देवस्य का अर्थ है- उदारता दूरदर्शिता । धीमहि का अर्थ है सद्गुणों उत्तम स्वभाव, देवी संपदाएँ उच्चविचारथियो का तात्पर्य किसी व्यक्ति ग्रंथसंप्रदाय का अंधानुयायी न होकर विवेक के आधार पर केवल उचित को ही स्वीकार करो। योनकी शिक्षा है संयम तर ज्ञान सहिष्णुता, तितिक्षा कठोर श्रम मितव्ययता शक्ति का संचय और सदुपयोग प्रचोदयात् अर्थात् प्रेरणा देना, गिरे हुए को ऊँचा उठाना, उत्साहित करना प्रफुल्लित संतुष्ट एवं सेवा परायण रहना।" [xvii]

आचार्य शर्मा जी के अनुसार गायत्री के अक्षरों में सन्निहित शिक्षाओं को व्यवहारिक जीवन में अपनाना, अपने को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना तथा तपश्चर्या द्वारा देवी शक्तियों को अपने अंतरात्मा में प्रकट करके आत्म बल से सुसज्जित होना- गायत्री उपासना के दो कार्यक्रम है। इस मार्ग में चलने में कावहारिक सहयोग देना, पथ प्रदर्शन करना गुरू का कार्य है। गुरू वह है जो स्वयं ब्रहमत्व से ओत-प्रोत हो गायत्री तत्य दर्शन को जीवन में उतार चुका हो। क्योंकि जिसमें स्वयं में अग्नि होगी वही दूसरों को प्रकाश और गर्मी दे सकेगा। इसीलिए आचार्य जी का मत है- गुरू कान नहीं फूकता है प्राण फूकता है।युग ऋषि आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने गायत्री के तत्व दर्शन को जन-जन तक पहुंचाया और उसे जन सुलभ बनाया है। प्रत्यक्ष कामधेनु की तरह इसका हर कोई पय पान कर सकता है। जाति मत लिंग से परे गायत्री सर्व जननी है। सबके लिए उसकी साधना उपासना करने व लाभ उठाने का मार्ग खुला हुआ है।

आचार्यश्री के अनुसार गायत्री उपासना कभी भी किसी भी स्थिति में की जा सकती है। हर स्थिति में यह लाभकारी है परन्तु विधिपूर्वक भावना से जुडे न्यूनतम कर्मकाण्डो" (पवित्रीकरण, आचमन, शिक्षा-वंदन, प्राणायाम् न्यास पृथ्वी-पूजन, देव- आवाहन, पूजन के बाद जप ध्यान अंत में सूर्यार्घ्यदान, विसर्जन) के साथ की गई उपासना अतिफलदायी मानी गई है। [xviii]न्यूनतम तीन माला गायत्री का जप आवश्यक माना गया है। शौच-स्नान आदि से निवृत्त होकर नियत स्थान नियत समय पर सुखासन में बैठ कर नित्य गायत्री की उपासना की जानी चाहिए।

जिस प्रकार सूर्य की किरणें सभी स्थानों पर एक समान पड़ती है लेकिन उन किरणों को एकत्रित किया जाए तो आग जलने जैसी गर्मी भी उत्पन्न हो सकती है। ठीक उसी प्रकार उपासना के माध्यम से बिखरी छुपी भगवत् चेतना को आकर्षित एवं एकत्रित किया जाता है.जिससे व्यक्ति की आत्मिक क्षमता बढ़ सकती है और उस संचय के बल पर भौतिक दृष्टि से सुसंपन्न तथा आत्मिक दृष्टि से सुसंस्कारित बना जा सकता है। इस प्रकार पं. श्रीराम शर्मा जी के चिंतन में उपासना एक महत्वपूर्ण विज्ञान है, उसे अपना कर जीवन को विभूति संपन्न एवं सार्थक बनाने का प्रयास हर विचारवान व्यक्ति को करना ही चाहिए।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

सन्दर्भ सूची

[i]आचार्य श्रीराम शर्मा, जीवन देवता की साधना-आराधना, पृष्ठ-9-10, प्रकाशक- युग निर्माण योजना, मथुरा

[ii]आचार्य श्रीराम शर्मा, उपासना का तत्वदर्शन और स्वरूप पृष्ठ 48. युग निर्माण योजना मथुरा

[iii]आचार्य श्रीराम शर्मा, उपासना का तत्वदर्शन और स्वरूप, पृष्ठ 14. युग निर्माण योजना, मथुरा

[iv]गुप्त महेन्द्र नाथ श्रीरामकृष्णवचनामृत सार पृष्ठ 60,रामकृष्णमठ,नागपुर

[v]आचार्य श्रीराम शर्मा, उपासना का तत्वदर्शन और स्वरूप, पृष्ठ 49. युग निर्माण योजना मथुरा

[vi]गुप्त महेन्द्र नागर, श्रीरामकृष्णवचनामृत सार पृष्ठ 91, रामकृष्णमठ,नागपुर

[vii]आचार्य श्रीराम शर्मा, उपासना का तत्वदर्शन और स्वरूप, पृष्ठ 46. युग निर्माण योजना मथुरा

[viii]आचार्य श्रीराम शर्मा, उपासना-समर्पण योग, पृष्ठ 3.43, युग निर्माण योजना, मथुरा

[ix]आचार्य श्रीराम शर्मा, उपासना का तत्वदर्शन और स्वरूप, पृष्ठ 11. युग निर्माण योजना

[x]आचार्य श्रीराम शर्मा, उपासना के दो चरण जप और ध्यान, पृष्ठ 35, युग निर्माण योजना मधुरा

[xi]वही,पृष्ठ 36

[xii]आचार्य श्रीराम शर्मा, गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान परकसाधनाएँ पृष्ठ 3.58. युग निर्माण योजना, मथुरा

[xiii]आचार्य श्रीराम शर्मा, गायत्री महा विज्ञान भाग 1, पृष्ठ 32. युग निर्माण योजना

[xiv]वही,पृष्ठ39.

[xv]अथर्ववेद 19/71 /1

[xvi]आचार्य श्रीराम शर्मा, गायत्री महा विज्ञान भाग 1, पृष्ठ 213-214. युग निर्माण योजना मथुरा

[xvii]आचार्य श्रीराम शर्मा, गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार पृष्ठ 1.4. युग निर्माण योजना

[xviii]आचार्य श्रीराम शर्मा की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान पर साधनाएँ पृष्ठ 4. 8. युग निर्माण योजना, मथुरा